कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या 2279754

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय इतिहास

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 22-03-2025

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	18	19	04
2	06	20	05
3	11	21	
4	02	22	
5	02	23	
6	02	24	
7	02	25	
8	02	26	
9	02	27	
10	02	28	
11	02	29	
12	02	30	
13	02	31	
14	03	योग	80
15	03	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	03	अंकों में	शब्दों में
17	03	80	अस्सी
18	04		

परीक्षक के हस्ताक्षर [signature] संकेतांक 31059

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 180/2025

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी:–
   - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1

श्री

(खण्ड - अ)

Ans. 1

1	i)	(स) ।
1	ii)	(अ) ।
1	iii)	(अ) ।
1	iv)	(द) ।
1	v)	(अ) ।
1	vi)	(स) ।
1	vii)	(स) ।
1	viii)	(स) ।
1	ix)	(ब) ।
1	x)	(अ) ।
1	xi)	(द) ।
1	xii)	(स) ।
1	xiii)	(द) ।

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	Ans.1	
1		xiv) (ब) ।
1		xv) (अ) ।
1		xvi) (द) ।
1		xvii) (स) ।
1		xviii) (द) ।
18×1 = 18		
	Ans.2	
1		i) मौर्य ।
1		ii) चाण्डालो ।
1		iii) 973 ।
1		iv) विजयनगर ।
1		v) कपास ।
1		vi) फ्रांसिस बुकानन ।
6×1 = 6		

BSER-10/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

Ans.3

1 i) सिन्धु घाटी सभ्यता का स्थल "बनावली" वर्तमान मे "हरिआणा" राज्य मे स्थित है।

1 ii) सम्राट अशोक वह पहले सम्राट थे जिन्होने अपने अधिकारियो और प्रजा के लिए संदेश प्राकृतिक पत्थरो और पॉलिश किए हुए स्तंभो पर लिखवाए।

1 iii) आरंभिक संस्कृत परम्परा मे महाभारत को "इतिहास" की श्रेणी मे रखा गया।

1 iv) बुद्ध ही बौद्ध धर्म के प्रथम व प्रमुख उपदेशक थे। उन्होने अपने विचारो व दर्शन का प्रचार-प्रसार किया जिससे बौद्ध धर्म तेजी से मध्य एशिया से चीन होते हुए, जापान, रूस, म्यांमार, थाइलैण्ड, इण्डोनेशिया व श्रीलंका आदि क्षेत्रो मे फैला।

बुद्ध के निर्वाण प्राप्ति के बाद उनके शिष्यो ने वरिष्ठ श्रमणो की एक सभा वैशाली मे आयोजित की। पाँचवी-चौथी ई.पू. बुद्ध के अनुयायियो ने "त्रिपटक" नाम बौद्ध ग्रन्थ की रचना की जिसमे बौद्ध धर्म से जुड़े हुए नियम-कायदे संकलित थे।

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	v)	प्रसिद्ध यात्री ज्यों- बैप्टिस्ट तेवर्नियर "फ्रांस" के निवासी थे।
1	vi)	सगुण भक्ति : वह भक्ति जिसमे ईश्वर के मूर्त रूप मे उपासना की जाती है सगुण भक्ति कहलाती है। इसके अन्तर्गत देवी - देवताओ की मूर्तियो की पूजा की जाती है। सगुण अर्थात् "विशेषण सहित" भक्ति।
1	vii)	राक्षसी - तांगड़ी का युद्ध जनवरी 23 1565 को हुआ था।
1	viii)	खुद - काश्त : मुगल काल मे खुद-काश्त वे किसान थे जो उन्ही गाँवो मे खेती करते थे, जहाँ उनकी जमीने थी।
1	ix)	इस्तमरारी अथवा स्थायी बन्दोबस्त की विशेषताएँ : i) इस्तमरारी बन्दोबस्त सन् 1793 मे बंगाल मे लागू किया गया था। ii) इस्तमरारी बन्दोबस्त कम्पनी सरकार व जमीदारो के बीच लागू किया गया बन्दोबस्त था।

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1 x) दक्षिण अफ्रीका मे ही गाँधीजी ने अपने अहिंसात्मक तरीका का प्रयोग सत्याग्रह के रूप मे किया था। दक्षिण अफ्रीका मे गाँधीजी ने सरकार की रंग-भेद नीति का विरोध किया व विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायो के मध्य सौहार्द स्थापित किया। गाँधीजी ने यहाँ उच्च कुल के व्यक्तियो को दलित लोगो व महिलाओ के प्रति किए जाने वाले भेदभाव का विरोध करते हुए चेतावनी दी थी।
इस प्रकार दक्षिण अफ्रीका ही गाँधीजी के सत्याग्रह की प्रथम पाठशाला बना व उन्हे "महात्मा" बना दिया।

1 xi) संविधान सभा का गठन मे हुए आम चुनावो के [illegible]-46 माध्यम से हुआ था। ब्रिटिश भारत के प्रान्तो के सांसदो ने संविधान सभा के सदस्यो चुनाव किया था।
संविधान सभा का गठन मार्च 1946 मे भारत मे आये "कैबिनेट मिशन" के तहत हुआ।
संविधान सभा मे प्रत्येक रेजीडेन्ट द्वारा भेजे गए प्रतिनिधि भी शामिल थे। लगभग 300 सदस्य संविधान सभा के सदस्य थे।

11x1 = (11)

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(खण्ड - ब)

2 Ans. 7) सिंधु घाटी सभ्यता के लोग सिंचाई के लिए निम्न साधनो का प्रयोग करते थे :-
i) कुँए ii) नहरें व iii) जलाशय।

→ हड़प्पा सभ्यता के शोतुघई (अफगानिस्तान) नामक स्थल से नहरों के अवशेष मिले है, जिससे ज्ञात होता है कि नहरों का प्रयोग सिंचाई मे किया जाता था।

साथ धौलावीरा नामक स्थल से जलाशय के अवशेष प्राप्त हुए है जिससे पता चलता है कि यहाँ सिंचाई के लिए जलाशय का प्रयोग किया जाता था।

हड़प्पा सभ्यता के सबसे विशाल व भव्य स्थल मोहनजोदड़ो से लगभग 700 कुँए के अवशेष मिले है।

अतः निम्न अवशेषो के आधार पर हम कह सकते है कि हड़प्पा निवासी कुँए, नहरें व जलाशयो के माध्यम से सिंचाई करते थे।

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

2 Ans.5) छठी शताब्दी ई.पू. मे होने वाले महत्वपूर्ण परिवर्तन अथवा घटनाएँ निम्न प्रकार है -

i) छठी शताब्दी ई.पू. मे 16 महाजनपदो का उदय हुआ था।

ii) इसी समय जैन व बौद्ध धर्म का विकास हुआ।

iii) छठी शताब्दी ई.पू. से ही लोहे के प्रचलन मे तीव्रता आई।

iv) इसी समय नये - नये नगरो, शहरो, कस्बो का विकास हुआ था।

2 Ans.6) गोत्र :- ब्राह्मणीय परम्परा के अनुसार प्रत्येक गोत्र का विकास एक वैदिक ऋषि के नाम पर हुआ था। प्रत्येक गोत्र के सदस्य उस ऋषि के वंशज माने जाते थे।

यथा → गौतम व वशिष्ठ नामक ऋषियो के नाम पर गोत्र का विकास हुआ। गौतम व वशिष्ठ गोत्र के वंशज इन ऋषियो के वंशज कहलाते थे।

सातवाहन वंश की कुछ रानियाँ गौतम तथा वशिष्ठ गोत्रो से सम्बन्धित थी।

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

2 Ans 7. चौदहवी शताब्दी मे अफ्रीका से आने वाले यात्री इब्न - बतूता ने दिल्ली शहर की निम्न विशेषताएँ बताती थी -

i) इब्न - बतूता ने दिल्ली को भारत का सबसे बड़ा शहर बताया था।

ii) इब्न - बतूता के अनुसार दिल्ली शहर के 28 द्वार (दरवाजे) थे जिनमे सबसे बड़ा बदायूँ दरवाजा था।

iii) माण्डवी नामक दरवाजे मे एक अनाज मंडी थी और गुल नामक दरवाजे मे फूलो का एक बगीचा था।

iv) इब्न - बतूता ने दिल्ली की चारदिवारी का प्रसंशा करते हुए कहा था कि दिल्ली की किलेबंदी की दिवार इतनी बड़ी है कि इस पर एक साथ कही घुड़सवार एक साथ चल सकते है।

v) इसमे सैनिको, रात के पहरेदारो के लिए कमरे बने हुए है और अनाज के कोटार (भण्डार - ग्रह) भी बने हुए है।

2 Ans 8) चिश्ती उपासना मे कव्वाली का तात्पर्य है :- गायन संबंधी गति- विधि।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

i) चिश्ती उपासना मे कौल का प्रचलन अमीर खुसरो (शेख निजामुद्दीन औलिया - मृत्यु वर्ष 1325) ने किया था।

ii) अमीर खुसरो ने चिश्ती स उपासना मे कौल का प्रचलन कर समा (आध्यात्मिक संगीत की महफिल) को विशिष्टता प्रदान की।

iii) चिश्ती उपासक शेख की दरगाह पर कव्वाल की शुरूआत एक कविता से करते है बाद मे कव्वाली गायी व सुनाई जाती है।

iv) आज भी चिश्ती दरगाहो पर कव्वाल गायको द्वारा कव्वाली का गायन किया जाता है।

② प्र.9) महानवमी डिब्बा से जुडे विशेष अनुष्ठान सितम्बर - अक्टूबर के महीने मे दस दिन के त्यौहारो उत्तर भारत मे दशहरा, बंगाल मे दुर्गापूजा व प्रायद्वीपीय भारत मे नवरात्र या महानवमी के अवसर पर आयोजित किए जाते थे।

ये अनुष्ठान निम्न प्रकार है :

i) राज्य के अश्वो की पूजा।

ii) भैंस, बकरी आदि जानवरो की बलि।

इन अवसरो पर राजा अपनी शक्ति व प्रतिष्ठा का प्रदर्शन करता था।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(2) Ans.10 i) मुगल साम्राज्य मे कृषक वर्ष पर्यन्त खेती से जुड़े विभिन्न प्रकार के कार्यो मे संलग्न रहते थे। यथा- खेत की जुताई, बिराई, गुड़ाई व कटाई आदि।

ii) कृषको को जब खेती के कामो के मध्य अन्तराल मिलता था। यथा- बुवाई व सुआई के मध्य और सुआई व कटाई के मध्य तो वह विभिन्न प्रकार के दस्तकारी के कामो मे लग जाते थे।

iii) किसान दस्तकारी के अन्तर्गत रंगरेजी, कपड़े की बुनाई, मिट्टी के बर्तन व औजार बनाना व उनकी मरम्मत करना, काश्तकारी आदि कार्य करते थे।

iv) इस कारण से मुगल काल मे कृषको व दास्तकारो मे प्राय: भेद नही किया जा सकता था।

(2) Ans.11 i) जोतदार :- बंगाल के धनी कृषक जोतदार कहलाते थे। ये प्राय: शक्तिशाली, जिद्दी व हट्टी होते थे। इनके पास अपनी बड़ी-बड़ी जमीने होती थी। ये गाँव मे रहते थे और कृषको पर नियंत्रण रखते थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

जोतदार रैयतो को अपने पक्ष मे रखते थे और जमींदारो द्वारा लगान बढ़ा देने पर विरोध करते थे। ये लगान के रूप मे थोड़ा-सा भाग देते थे और हर किस्त मे कुछ-न-कुछ बाकी रख देते थे।

जमींदारो द्वारा कचहरी ले जाने पर ये फौजदार न्यायालय या मुन्सिफ की तहसील पहुँच जाते थे उन्हे अपमानित करने की शिकायत करते थे।

iii) रैयत :- मुगल-कालीन उर्दू-फारसी स्रोत किसानो के लिए प्राय: रैयत व मुजरियान शब्द का प्रयोग करते थे। इन्हे आसामी व ह्यक भी कहा जाता था।

Q.12 झांसी की रानी ने बगावत का नेतृत्व संभाला :-

i) 10 मई 1857 को मेरठ से क्रांति की शुरुआत हुई।

ii) 11 मई को सैनिक दिल्ली पहुँच गये और बहादुरशाह जफर को क्रांति का नेता घोषित कर दिया।

iii) इससे झाँसी के विद्रोही व गाँव वालो ने झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई पर इस बगावत का नेतृत्व करने को कहा।

(2)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

iv) अन्ततः विद्रोहियो व ग्रामीणो के दबाव मे रानी ने झांसी मे नेतृत्व संभाला।

v) जून, 1857 मे रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु हो गई।

(2) Ans. 13) प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस :- मुस्लिम नेता मोहम्मद जिन्ना ने "पाकिस्तान" की माँग को जारी रखते हुए मुस्लिम लीग की ओर से 16 अगस्त 1946 को प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मनाने की घोषणा की। 16 अगस्त 1946 को प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मनाया गया और इसी के साथ कलकत्ता मे खूनी विद्रोह शुरू हो गया। यहाँ से शुरू हुए दंगे-फसाद ग्रामीण बिहार, बंगाल, संयुक्त प्रांत व पंजाब तक पहुँच गये और लगभग 1 वर्ष तक कायम रहे।

(खण्ड - स)

(3) Ans. 14.) हड़प्पा सभ्यता का सबसे महत्वपूर्ण पहलू शहरी केन्द्रो का विकास था। इसके निम्न कारण दिए जा सकते है -

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

i) हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख केन्द्रो अथवा शहरो का निर्माण एक नियोजित क्रम मे किया गया था।

ii) हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख शहरो मे प्रत्येक गली व सड़के एक - दूसरे को "समकोण" पर काटती थी।

iii) हड़प्पाई केन्द्रो को "ग्रीड पद्धति" से बनाया गया था।

iv) सम्भवत: यहाँ पहले गलियो के साथ सड़के बनाई गई और बाद मे आस-पास आवासो का निर्माण हुआ।

v) हड़प्पा सभ्यता मे "जल - निकास" की उचित व्यवस्था थी।

vi) यहाँ प्रत्येक गली को प्रमुख नालियो से जोड़ा गया था। घरो का गन्दा पानी एक हौदी या मलकुण्ड मे खाली हो जाता था। कठोर पदार्थ वहाँ एकत्रित हो जाते थे और गन्दा पानी नाले मे बह जाता था।

vii) हड़प्पा सभ्यता के घर पक्की व कच्ची ईंटो से बनाये जाते थे। प्राय: ईंटे एक ही अनुपात की होती थी।

viii) हड़प्पा सभ्यता 2:4 मे लगभग प्रत्येक घर मे ईंटो के फर्श से बना एक "स्नानघर" होता था।

ix) घरो मे कम से कम एक कमरे मे कुआँ होता था, जहाँ बाहर से आया

BSER_180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

जा सकता था। इसका प्रयोग प्रायः राहगीरों द्वारा किया जाता था।

(3) Ans. 18

प्रारंभिक भक्ति परम्परा

i) प्रारंभिक भक्ति परम्परा की शुरुआत लगभग छठी शताब्दी ई. पू. मे हुई थी।

ii) प्रारंभिक भक्ति परंपरा की शुरुआत अलवारो व नयनारो के नेतृत्व मे हुई थी।

iii) अलवार व नयनार तमिल भक्त थे जो एक-स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते हुए अपने ईश्वर की स्तुति मे भक्ति गान करते थे।

iv) अलवार विष्णु के उपासक थे और भगवान विष्णु को ही अपना सर्वस्व मान कर पूजते थे।

v) नयनार भगवान शिव की पूजा करते थे और उनकी स्तुति मे भजन गाया करते थे।

vi) प्रमुख अलवार भक्तो की संख्या 12 है, जिनमे से एक स्त्री भक्त "अंडाल" है।

vii) अंडाल स्वयं को विष्णु की प्रियसी मान कर अपने विष्णु भजनो को छन्दो मे व्यक्त करती थी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

viii) करइक्काल इम्मइय्यार नामक नयनार स्त्री भक्त ने भक्ति का एक कठोर मार्ग अपनाया था।

ix) अलवारो के भक्ति - गीतो को "नालयिरा - दिव्यप्रबंधन" नामक ग्रंथ मे संकलित किया गया है।

x) नयनार भक्तो के काव्य - संकलन को "तवरम्" नाम दिया गया है।

(4)

Ans. 16) 1857 मे अवध विद्रोह

1857 की क्रांति की शुरुआत मई 1857 को मेरठ से हुई थी।

1856 मे अंग्रेजो ने अवध के नवाब वाजिद अली शाह को कुशासन का आरोप लगाकर कलकत्ता निष्कासित कर दिया था। नवाब वाजिद अली शाह अवध की जनता मे अत्यधिक लोकप्रिय थे। उनके निष्कासन से जनता मे आक्रोश व्याप्त था क्योंकि :-

i) वहाँ दरबार व संस्कृति नष्ट हो चुकी थी।

ii) कवियो, कलाकारो, संगीतकारो, बावर्चियो, सरकारी अधिकारियो का पद छिन चुका था। जिससे वे बेरोजगार हो गये थे।

BSER-18/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इन परिस्थितियों मे अवध मे विद्रोह ने व्यापक रूप धारण कर लिया। अवध मे ही 1857 का विद्रोह सबसे अधिक चला था।

अवध मे विद्रोह मे प्रमुखता :-

i) जमीदारो द्वारा विद्रोह :- अंग्रेजो ने जमीदारो को उनकी जमीनो से निष्कासित कर दिया, उनके महल गिरा दिए और सैनिक टुकडियाँ भंग कर दी गई। इस कारण जमीदारो की शक्ति व प्रतिष्ठा का भारी आघात पहुँचा और उन्होने विद्रोह का कदम उठाया।

ii) ताल्लुकदारो द्वारा विद्रोह :- अवध के अधिग्रहण के साथ ही ताल्लुकदारो की शक्तियाँ सीमित कर दी गई। जिससे उनकी प्रतिष्ठा को आघात पहुँचा। अंग्रेजो ने अपने हिसाब से न्याय राजस्व व्यवस्था लागू कर दी थी। इससे प्रेरित होकर ताल्लुकदारो ने क्रांति मे भाग लिया और घोर विद्रोह किया।

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

iii) कृषकों का विद्रोह:- अंग्रेज सरकार ने अवध मे 1856 मे अवध मे एकमुश्त बन्दोबस्त लागू कर दिया। उनका मानना था कि इससे कृषको की दशा मे सुधार होगा क्योंकि उन्हें कृषि का मालिकाना हक दे दिया जायेगा। परन्तु इसका उनकी स्थिति पर बुरा असर पड़ा और वे कर्ज मे डूब गये।

इस प्रकार अवध मे विद्रोह सबसे लम्बा चला।

Ans 17- भारत के संविधान मे केन्द्र सरकार व राज्य सरकार के बीच शक्तियों के बटवारे हेतु निम्न सुचियाँ बनायी गयी थी -

i) केन्द्र सूची :- इस सूची के अन्तर्गत आने वाले विषयो पर केन्द्र सरकार का अधिकार था। प्रमुख खनिज व आय करो को इसी सूची मे रखा गया है।

ii) राज्य सूची :- इस सूची के अन्तर्गत आने वाले विषयो पर राज्य सरकार का अधिकार था। इस सूची मे केन्द्र सूची की अपेक्षा कम विषय रखे गये है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

iii) समवर्ती सूची :- इस सूची के अन्तर्गत आने वाले विषयो पर केन्द्र व राज्य दोनो सरकारो का अधिकार है, परन्तु केन्द्र को वरीयता दी गई है।

अनुच्छेद 356 के अनुसार गवर्नर (राज्यपाल) की सिफारिश पर केन्द्र सरकार को राज्य सरकार के समस्त अधिकार अपने हाथ मे लेने का हक है।

(खण्ड - द)

17 जैन दर्शन की प्रमुख शिक्षाऐ निम्न प्रकार है :-

i) सम्पूर्ण विश्व प्राणवान है। पृथ्वी पर स्थित चट्टानो पेड़-पौधो व पत्थर व जल मे भी जीवन व्याप्त है।

ii) जैन दर्शन का अहिंसा का सिद्धान्त जैन धर्म का केन्द्र बिन्दु है प्रकृति मे पाये जाने वाले पेड़-पौधो, जीव-जन्तुओ, मनुष्यो यहाँ तक की कीड़े-मकोड़े के साथ भी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

iii) जन्म व पुर्नजन्म का चक्र कर्म द्वारा निर्धारित होता है। कर्म के चक्र से मुक्ति पाने के लिए त्याग और तपस्या जरूरी है। संसार त्याग से ही यह संभव सम्भव है, इसलिए विहारो मे निवास करना एक नियम बन गया।

iv) जैन साधु व साध्वी निम्न पांच व्रत करते थे :
i) हत्या/हिंसा न करना (अहिंसा)।
ii) झूठ न बोलना (सत्य)।
iii) चोरी न करना (अस्तेय)।
iv) धन संग्रह न करना (अपरिग्रह)।
v) ब्रह्मचर्य (ब्रह्मचर्य)।

ये व्रत पंच महाव्रत कहलाते है।

Ans. 18) नमक सत्याग्रह

(5)

महात्मा गांधी द्वारा 'नमक एकाधिकार के मुद्दे का चयन : महात्मा गांधी द्वारा नमक एकाधिकार के मुद्दे को चुनने के पीछे निम्न कारण थे -

i) नमक पर राज्य का एकाधिकार ब्रिटिश भारत के सबसे घृणित कानूनो मे से एक था।

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

ii) घरेलू उपयोग के लिए भी नमक बनाना वर्जित था।

iii) कृषकों को ऊँचे मूल्य पर दुकानों से नमक खरीदना पड़ता था।

iv) नमक का प्रयोग प्रत्येक घर में आवश्यक रूप से उपयोग होता था।

v) नमक पर यह एकाधिकार ग्रामीण उद्योगों / घरेलू उद्योगों से कृषकों को वंचित कर रहा था।

निम्न कारणों से गाँधीजी ने 'नमक' मुद्दे को चुना व 30 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस मनाये जाने पर घोषणा कि की वे नमक के एकाधिकार वाले इस घृणित कानून के विरोध में एक यात्रा का नेतृत्व करेंगे।

नमक यात्रा / दाण्डी यात्रा :- 12 मार्च को गाँधीजी ने गुजरात के साबरमती आश्रम से अपने 78 विश्वस्त साथियों के साथ यात्रा की शुरूआत की। जगह - जगह पर बहसें, घोषणाएँ हुई।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

6 अप्रैल 1930 को गाँधीजी ने दाण्डी (गुजरात) नामक स्थान पर मुट्ठी भर नमक उबाला और नमक कानून को तोड़ा। इस यात्रा मे गाँधीजी ने 24 K.M. की यात्रा तय की और 24 दिन लगभग 3 हफ्ते बाद दाण्डी पहुँचे थे। उन्होने नमक कानून तोड़ कर स्वंय को गिरफ्तारी के लिए पेश किया।

नमक सत्याग्रह का महत्व है, नमक सत्याग्रह

i) पूर्ण रूप से अहिंसात्मक आन्दोलन था।

ii) यह एक राष्ट्रीय आन्दोलन न होकर जन आन्दोलन था।

iii) इस आन्दोलन मे बड़ी संख्या मे महिलाओ ने भागीदारी ली और शराब व विदेशी वस्त्रो की दुकानो पर धरना दिया।

iv) कमला देवी चट्टोपाध्याय सहित सैकड़ो महिलाओ ने स्वंय को गिरफ्तारी के लिए प्रस्तुत किया।

ब्रिटिश सरकार की दमनात्मक नीति है इस आन्दोलन के विरोध मे ब्रिटिश सरकार ने दमनात्मक नीति अपनाई और लगभग 60,000 व्यक्तियो को गिरफ्तार किया।

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

नमक आन्दोलन का कार्यक्रम / महत्व :- इस आन्दोलन
i) मे विदेशी वस्त्रो की होली जलाई गई।
ii) शराब की दुकानो पर धरना दिया गया।
iii) सरकारी स्कूल, कॉलेजो व अदालतो का बहिष्कार किया गया।
iv) सरकारी उपाधियाँ लौटा दी गई।

गाँधी - इरविन समझौता :- मार्च 1931 मे गाँधीजी व लार्ड इरविन के मध्य समझौता हुआ। इस समझौते की शर्ते निम्न थी -
i) गाँधीजी ने द्वितीय गोलमेज सम्मेलन मे भाग लेना स्वीकार कर लिया।
ii) राजनैतिक कैदियो की रिहाई।
iii) समुद्र - तटीय क्षेत्रो मे नमक बनाने की छूट।
iv) सविनय अवज्ञा आन्दोलन को समाप्त करना।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन पुनः शुरू :- द्वितीय गोलमेज की विफलता के बाद 1932 मे गाँधीजी ने गोलमेज सम्मेलन फिर शुरू कर दिया।

कुल अंक = 80

समाप्त 4/5/025 31059

Sl.No. : 192651

नामांक Roll No.

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

SS-13-Hist.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2025

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2025

इतिहास

HISTORY

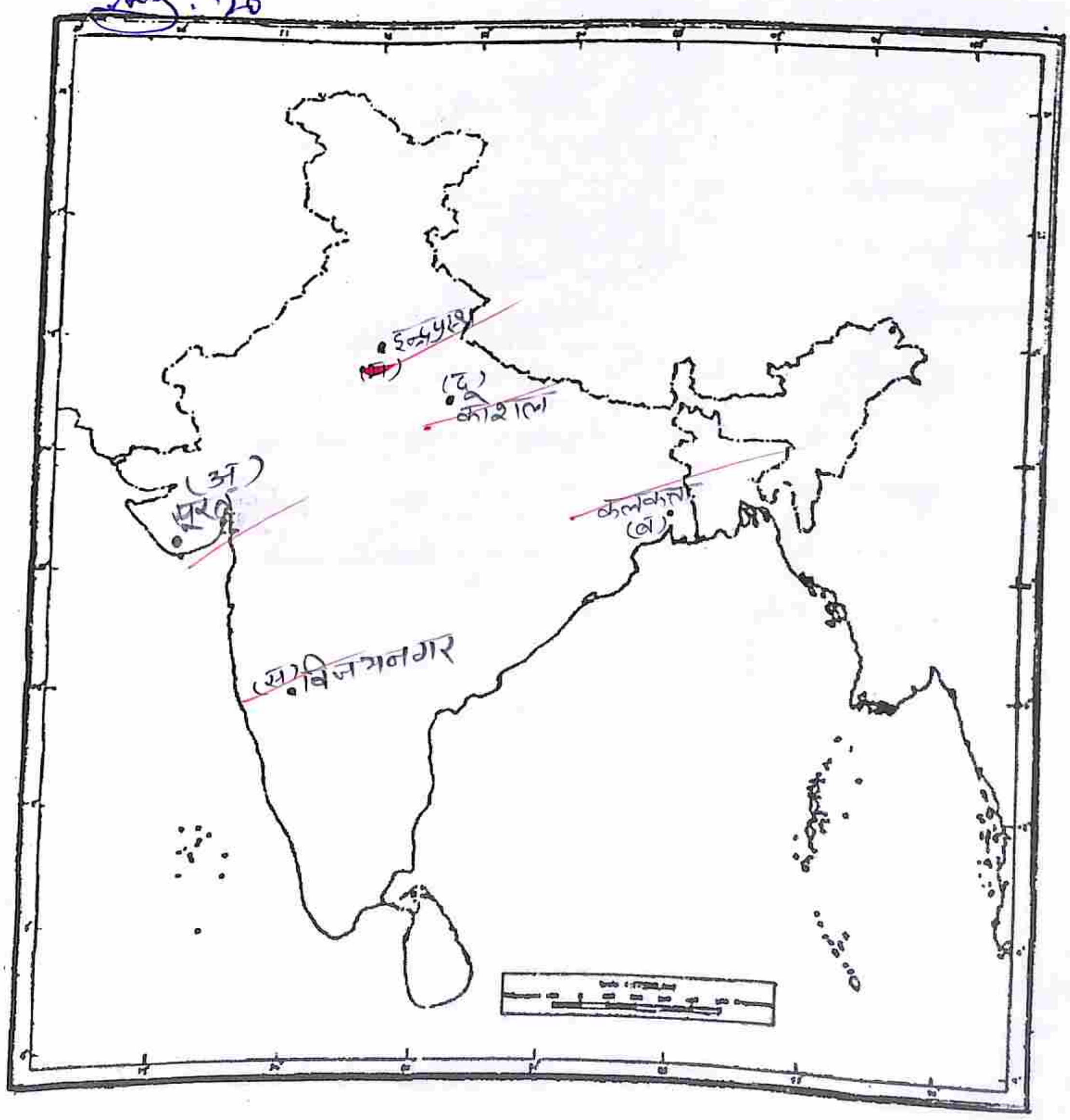

7009

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025